शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साहित्य और ग्रामीण जीवन

(19-20 मार्च 2016 , राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी)

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

दुनिया की संस्कृति और सभ्यता के विकास के तीन चरण रहे हैं । प्रथम आरण्यक संस्कृति, द्वितीय ग्रामीण संस्कृति और तृतीय औद्योगिक संस्कृति । भारत में आरण्यक संस्कृति और ग्रामीण संस्कृति का गौरवशाली इतिहास है। आरण्यक संस्कृति में दुनिया के श्रेष्ठतम साहित्य वेदों की रचना हुई। उपनिषदकाल से होती हुई भारतीय संस्कृति ने अपने भीतर अनेक विचारों से समन्वय की साधना की । वैचारिक मत-भिन्नता को हमारे षड्दर्शनों में देखा जा सकता है । रामायणकाल में समाज में उच्चादर्श स्थापित करने के प्रयत्न हुए। इसके पश्चात ग्राम्य संस्कृति का विकास हुआ, जिसने दुनिया को भगवतगीता जैसा अद्भुत ग्रन्थ दिया। भारत की विकसित ग्राम्य संस्कृति के कारण इसे 'गाँव के देश' की उपाधि प्राप्त हुई । इस ग्राम्य संस्कृति के आसपास विपुल साहित्य रचा गया॥ प्राचीन भारत में ब्रह्म विद्या की खोज जंगलों में हुई॥ ग्राम्य संस्कृति में ब्रह्म विद्या युद्ध भूमि में दी गयी। श्रीमदभगवतगीता इसका उदाहरण है । औद्योगिक संस्कृति में ब्रह्म विद्या मजदूरी के क्षेत्र में प्रकट होना चाहिए। औद्योगिक संस्कृति ने भारतीय ग्राम्य संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। भारत ने जब वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रवेश किया, उसके बाद से परिवर्तनों की प्रक्रिया तीव्र हो गयी । स्थाई जीवन मूल्यों पर निरंतर प्रहार हुए और हो रहे हैं, जिससे स्थाई समाज व्यवस्था खंडित होती दिखाई दे रही है । ग्रामीण जीवन पर औद्योगिक संस्कृति के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को लेकर कालजयी साहित्यकारों ने अपनी चिंताएं व्यक्त की हैं॥ साहित्यकारों के चिंतन पर गंभीर अध्ययन करने के उद्देश्य से शब्द-ब्रह्म एसोसिएशन और तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 19-20 मार्च 2016 को राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित की गयी । संगोष्ठी का उद्घाटन सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ.नवनीत चौहान, डॉ.श्रीराम परिहार, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ.आर.डी.मुसलगाँवकर, भाषा अध्ययन शाला के विभागाध्यक्ष डॉ.लक्ष्मण शिंदे ने किया । डॉ.नवनीत चौहान और डॉ.श्रीराम परिहार ने बीज वक्तव्य दिया। चार सत्रों में विभिन्न विषयों पर 150 शोध पत्रों का वाचन किया गया । इन सत्रों की अध्यक्षता डॉ.वंदना अग्निहोत्री, डॉ.संध्या गंगराडे, डॉ.अशोक सचदेवा, डॉ.एस.गुहा. डॉ.अरुणा कुसुमाकर. डॉ.गोपाल शर्मा, डॉ.चंदा तलेरा जैन, और डॉ.लक्ष्मण शिंदे ने की । साहित्यकार डॉ.राजेंद्र मिश्र के मुख्य आतिथ्य में समापन समारोह आयोजित किया गया । इसमें प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए । इस अवसर पर डॉ.पुरुषोत्तम दुबे, डॉ.गोपाल शर्मा, डॉ,वंदना नाफड़े, डॉ.शहजाद कुरैशी, अलीगढ़ की आबिदा खान, डॉ.अरबिंद यादव, डॉ.आनंद निघोजकर, डॉ.दीपक शर्मा. डॉ.मितेश चौधरी, डॉ.निलेश मंडलोई, प्रोफे.प्रवीण शर्मा, प्रोफे.मनोज जोशी, प्रोफे.महिमा जैन, सहित अनेक प्राध्यापक और शोधार्थी उपस्थित थे। इस संगोष्ठी में हिंदी के अलावा संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू साहित्य, अर्थशास्त्र, संगीत, पत्रकारिता एवं जनसंचार, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र गृहविज्ञान विषय के शोध पत्रों का वाचन किया गया। डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे ने आभार माना॥

शब्द्ब्रहम के इस अंक में संगोष्ठी में वाचन किये गए शोध पत्रों को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है । चूंकि शोध पत्रों की संख्या अधिक है, इसलिए शेष शोध पत्रों को शब्द्ब्रहम के आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा। शोधार्थी अपने पंजीयन क्रमांक से शोध पत्रों को देख सकते हैं । सभी ने जिस उत्साह से शोध संगोष्ठी में भाग लिया, उसके प्रति पुन: आभार॥